सप्तकांड

रामायण

असमीया साहित्य का भंडार अति प्राचीन और समृद्ध है। इस बात की पुष्टि के लिए कंडलि का रामायण ही पर्याप्त है। इस प्राचीन एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रचना के पद्यानुवाद करने का यह पहला प्रयास है।यहाँ अनुवाद के संदर्भ में अपनायी गयी नीतियों पर प्रकाश डालना आवश्यक होगा। इस कृति को पदानुक्रम से पहले लिप्यंतरण किया गया है और फिर पदों के अर्थ रखे गए हैं। लिप्यंतरण में उच्चारण की अपेक्षा शब्दों की व्युत्पत्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इससे शब्दों की मूल आत्मा सुरक्षित रहेगी। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स','च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिंदी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं-एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य̲' रखा गया है।